ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

सह–शिक्षा "Co-education" एवं कन्या महाविद्यालयों "Women's Colleges" में अध्ययनरत छात्राओं के आत्मविश्वास एवं सामाजिक स्वतंत्रता का तुलनात्मक अध्ययन

विमला, शोधार्थी, शिक्षा विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
डॉ. सुमन रानी, शिक्षा विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य दो भिन्न प्रकार के शैक्षिक वातावरणों–सह–शिक्षा और केवल कन्या महाविद्यालयों–में छात्राओं के मनोवैज्ञानिक विकास का विश्लेषण करना है। विशेष रूप से यह अध्ययन छात्राओं के 'आत्मविश्वास' (Self&confidence) और उनकी 'सामाजिक स्वतंत्रता' (Social Freedom) की धारणा पर केंद्रित है। शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रारंभिक निष्कर्ष दर्शाते हैं कि शैक्षिक परिवेश छात्राओं के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जहाँ सह–शिक्षा उन्हें विपरीत लिंग के साथ सामंजस्य सिखाती है, वहीं कन्या महाविद्यालय उन्हें नेतृत्व के स्वतंत्र अवसर प्रदान करते हैं।

परिचय

महिला सशक्तिकरण का आधार शिक्षा है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भारत में दो प्रकार की व्यवस्थाएं प्रचलित हैं: सह–शिक्षा, जहाँ छात्र–छात्राएं साथ पढ़ते हैं, और एकल लिंग शिक्षा (Single&sex Education)। किशोरावस्था के बाद जब छात्राएं महाविद्यालय में प्रवेश करती हैं, तो उनके आत्मविश्वास और सामाजिक दृष्टिकोण का विकास उनके परिवेश पर निर्भर करता है।

आत्मविश्वास वह शक्ति है जो व्यक्ति को लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रेरित करती है, जबकि सामाजिक स्वतंत्रता का अर्थ उन रूढ़ियों और बंधनों से मुक्ति है जो महिलाओं की प्रगति में बाधक हैं। यह शोध यह समझने का प्रयास है कि ये दोनों शैक्षिक वातावरण छात्राओं के मानसिक और सामाजिक क्षितिज को अलग–अलग तरीके से प्रभावित करते हैं।

साहित्य समीक्षा

पूर्व के शोधों ने इस विषय पर विविध परिणाम दिए हैं:

स्मिथ (2015): के अनुसार, एकल लिंग कॉलेजों में छात्राएं कक्षा में अधिक मुखर (Assertive) होती हैं क्योंकि उन्हें लिंग–आधारित निर्णय का डर कम होता है।

राय और शर्मा (2019): ने भारतीय संदर्भ में पाया कि सह–शिक्षा संस्थानों की छात्राएं व्यावहारिक जगत और कार्यस्थलों (Workplaces) के लिए अधिक तैयार होती हैं क्योंकि उनका सामाजिक अंतःक्रिया का दायरा व्यापक होता है।

गुप्ता (2021): के अध्ययन के अनुसार, सामाजिक स्वतंत्रता की भावना उन छात्राओं में अधिक पाई गई जो शहरी क्षेत्रों के सह–शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत थीं।

प्रस्तावित शोध के सोपान

शोध को व्यवस्थित करने के लिए निम्नलिखित चरणों का पालन किया गया है:

विषय चयन एवं परिभाषीकरण: चरों (Variables) का चयन।

साहित्य का पुनरावलोकन: पूर्व शोधों का गहन अध्ययन।

न्यादर्श चयन: उपयुक्त कॉलेजों और छात्राओं का चुनाव।

उपकरणों का निर्माण: आत्मविश्वास और सामाजिक स्वतंत्रता मापने हेतु मापनियों का चयन।

प्रदत्त संकलन: डेटा इकट्ठा करना।

सांख्यिकीय विश्लेषण: टी–टेस्ट और सह–संबंध का प्रयोग।

व्याख्या एवं प्रतिवेदन: निष्कर्षों को लिपिबद्ध करना।

शोध समस्या

"सह–शिक्षा और कन्या महाविद्यालयों का वातावरण छात्राओं के आत्मविश्वास के स्तर और उनकी सामाजिक स्वतंत्रता की आकांक्षाओं में कोई सार्थक अंतर पैदा करता है।"

विधि तंत्र

शोध विधि: वर्णनात्मक तुलनात्मक सर्वेक्षण विधि (Descriptive Comparative Survey Method)।

न्यादर्श (Sample): कुल 300 छात्राएं (150 सह–शिक्षा महाविद्यालयों से और 150 कन्या महाविद्यालयों से)।
क्षेत्र: किसी विशिष्ट विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालय।
उपकरण (Tools):
अग्निहोत्री द्वारा निर्मित 'आत्मविश्वास मापन पैमाना'।
सामाजिक स्वतंत्रता प्रश्नावली (Social Freedom Scale)।
सांख्यिकीय प्रविधियाँरू मध्यमान (Mean), मानक विचलन (S.D.) और 'टी–मूल्य' (t-value) का उपयोग समूहों की तुलना के लिए किया गया।

उद्देश्य

सह–शिक्षा महाविद्यालयों की छात्राओं के आत्मविश्वास के स्तर को जानना।
कन्या महाविद्यालयों की छात्राओं के आत्मविश्वास का स्तर निर्धारित करना।
दोनों समूहों की छात्राओं की श्सामाजिक स्वतंत्रताश के प्रति धारणा की तुलना करना।
यह पता लगाना कि क्या आत्मविश्वास और सामाजिक स्वतंत्रता के बीच कोई सकारात्मक सह–संबंध हैं।

परिकल्पना

H01: सह–शिक्षा और कन्या महाविद्यालयों की छात्राओं के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
H02: कन्या महाविद्यालयों की छात्राएं सामाजिक स्वतंत्रता के मामले में अधिक रूढ़िवादी हो सकती हैं।
H03: आत्मविश्वास और सामाजिक स्वतंत्रता के बीच एक उच्च धनात्मक सह–संबंध पाया जाएगा।

महत्व

शिक्षाविदों के लिए: यह अध्ययन पाठ्यक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों के निर्माण में सहायक होगा।
अभिभावकों के लिए: बच्चों के लिए सही प्रकार के शिक्षण संस्थान के चयन में मार्गदर्शन मिलेगा।
छात्राओं के लिए: उन्हें अपने स्वयं के व्यक्तित्व विकास के प्रति जागरूक करेगा।
नीति निर्धारकों के लिए: महिला शिक्षा की भविष्य की नीतियों (जैसे को–एड बनाम सेपरेट कॉलेज) को दिशा देने में उपयोगी।

निष्कर्ष

अध्ययन के संभावित निष्कर्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि:
आत्मविश्वास: कन्या महाविद्यालयों की छात्राएं नेतृत्व की भूमिकाओं में अधिक आत्मविश्वास प्रदर्शित करती हैं क्योंकि उन्हें वहां बिना किसी संकोच के अवसर मिलते हैं।
सामाजिक स्वतंत्रता: सह–शिक्षा की छात्राएं विपरीत लिंग के साथ संवाद और सामाजिक बंधनों को तोड़ने में अधिक मुखर पाई जाती हैं।
सामंजस्य: दोनों प्रणालियों के अपने गुण–दोष हैं। निष्कर्ष यह सुझाव देता है कि शिक्षा के वातावरण से अधिक महत्वपूर्ण वहां दी जाने वाली 'सशक्तिकरण की शिक्षा' है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

कपिल, एच. के. (2018). अनुसंधान विधियाँ, हरप्रसाद भार्गव प्रकाशन, आगरा।
Mael, F. A. (1998). Single&sex and coeducational environments- Psychological Bulletin.
त्यागी, एस. के. (2015). शिक्षा में सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मंदिर।
Saks, K. (2020). Self&confidence and Social Interaction in Higher Education. Journal of Educational Psychology.
शर्मा, पी. (2021). भारतीय समाज में नारी शिक्षा और स्वतंत्रता, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।